ISSN 2455-6033

मीरायन

यू.जी.सी. केयरलिस्ट में सम्मिलित पत्रिका

वर्ष-17 अंक : 01 (पूर्णांक - 65) मार्च-मई, 2023

मीरा स्मृति संस्थान चित्तौड़गढ़ की बहुअनुशासनिक त्रैमासिक शोधपत्रिका

अनुक्रम

क्र.सं.	आलेख/रचना	पृष्ठ
1.	**मीरा-पद**	05
	1. **सन्त मीराबाई** (1) थारै रंग रीझी ..... (2) नंदजी के लाला	
2.	**मीरा-प्रशस्ति**	06
	2. **श्री गोपीनाथ पारीक 'गोपेश'**, जयपुर (राजस्थान) आली मेरे प्रतिपाली	
3.	**सम्पादकीय**	07–11
	3. **प्रो. सत्यनारायण समदानी**, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) बिजौलिया-बेगूँ किसान सत्याग्रह के नायक : महान क्रान्तिकारी विजयसिंह पथिक	
4.	**मीरा सन्दर्भपक्ष**	
	4. **श्री मीना मिलिन्द**, पुणे (महाराष्ट्र) मीराबाई और महादेवी वर्मा के काव्य में सौन्दर्यबोध एवं तुलनात्मक विवेचन	12–14
	5. **डॉ. कविश्री जायसवाल**, मेरठ (उत्तरप्रदेश) नेपाल की मीरा : प्रेमलता	15–18
5.	**सन्त-भक्तपक्ष**	
	6. **डॉ. विदुषी आमेटा**, सरदारशहर (राजस्थान) 'निर्मल गुरु का ज्ञान गहि, प्रकट भये भगवंत' : दादूवाणी में 'गुरु' का अस्तित्व एवं महत्त्व	19–23
	7. **डॉ. कैलाश गहलोत**, सिरोही (राजस्थान) सिद्ध और नाथ साहित्य का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश : एक अंतर्दृष्टि विश्लेषण	24–29
	8. **डॉ. रीना स्वामी**, महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) कन्नड़ कवयित्री अक्का की मानवीय दृष्टि	30–33
	9. **डॉ. चन्द्रकान्त सिंह**, धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) कबीर : आध्यात्मिक अजरता के सन्त कवि	34–39
	10. **पारुल वरनवाल**, फिरोजाबाद (उत्तरप्रदेश) स्वामी विवेकानन्द और भारत राष्ट्र का प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक कायाकल्प	40–43

कबीर : आध्यात्मिक अजरता के सन्त कवि

- डॉ. चंद्रकांत सिंह

कबीर की कविता आध्यात्मिक-बोध की कविता है जिसमें भक्ति, ज्ञान एवं दर्शन की अद्भुत लयकारी है। कबीर मात्र कवि भर नहीं हैं बल्कि सामाजिक विचारक एवं युगपुरुष हैं जो अपनी आँखों से भारतीय समाज का आकलन करते हैं और उसे नवीन-दृष्टि देने का काम करते हैं। समाज सुधार, जड़ताओं पर प्रहार आदि कबीर की कविता के बाहरी रूप हैं किन्तु आत्यन्तिक रूप से उनकी कविता की भूमिका आध्यात्मिक है। भीतर की अजर गुहा का रस चखने की चाह एवं जीवन से महाजीवन की यात्रा का कौतुक यहाँ दिखता है। कबीर अपने जन्म लेने के वास्तविक अर्थ की तलाश करते हैं। जीवन की सफलता-विफलता का आशय केवल सांसारिक उन्नति-अवनति भर नहीं है, जीवन के विराट अनुभव को प्राप्त करते हुए जीवन के वास्तविक आशय का पता लगाना है। कबीर मात्र अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन भर नहीं करते बल्कि कर्म करते हुए चेतना की ऊर्ध्व-यात्रा करते हैं। सांसारिक तौर पर अपनी जिम्मेदारियों के कुशल निर्वाह के साथ सतत ब्रह्म की खोज उनकी कविता का मूल है। इसलिए उनकी कविता को पढ़ते हुए यह कहा जा सकता है कि उसके कई रूप एवं पड़ाव हैं। जिनसे होते हुए कबीर ब्रह्म का आस्वादन करते हैं। सामान्य जीवन जीते हुए असामान्य अवस्था तक पहुँचने का उद्यम वहाँ है। शरीरी-बोध के साथ अशरीरी-बोध की ओर झुकाव वहाँ है। इसलिए उनकी कविता को आध्यात्मिक अजरता की कविता कहा जा सकता है, जहाँ कबीर आहिस्ते-आहिस्ते कदम रखते हैं।

कबीर अनुभव पर बल देते हैं और इसी अनुभव-रस से उनकी कविता का निर्माण हुआ है। कबीर मूलतः भक्त हैं, कविता करना उनका वास्तविक प्रयोजन भी नहीं है। उनका प्रयोजन तो अन्तर में डूबकर ब्रह्म से बतियाना है। उनकी कविता को खुद से खुद की बातचीत कह सकते हैं किंतु इस बातचीत में व्यर्थ की अटकलें नहीं हैं। जीवन-जगत का उद्देश्य, जन्म, मृत्यु, सृजन आदि कई रूप इस कविता में उभरते हैं और कबीर आत्म-रस से उद्बुद्ध शब्दों को भावातिरेक में कहते चले जाते हैं। कहने की यह शैली विशेष है जिसके लिए कबीर जाने जाते हैं। उनकी कविता पर विचार करते हुए प्रभाकर माचवे ने ठीक लिखा है कि - "कबीर ने स्वयं तो कुछ अपने हाथों लिखा नहीं। वह तो सिर्फ गाते और कहते जाते थे - अपने अंतर्मन की आँखों में देखो। उनकी बानी आने वाली पीढ़ियों के लिए तथा घर-घर की हर जुबान पर चढ़ी, अनुभव की बात बन गई। यदि कविता कहीं मंत्र की तरह जादू बनकर सब के सर पर चढ़ती हो, तो वह यहाँ है। उन्होंने अपने आत्मानुभव को छोटे-छोटे, सूक्तिमय दोहों में उड़ेल दिया। हर दोहा जीवन भर की अनुभूति की जैसे निचोड़ी हुई बूँद है।"[1]

प्रारम्भ में कबीर की कविता में रहस्यवादी प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ती हैं। कवि स्थूल जगत से रूहानी-मंडल की यात्रा करते हुए गहरे पिपासा-बोध से भरे होते हैं। प्रभु को जानने की इच्छा और भगवत में विलीन हो जाने की उदग्रता दिखती है। गुरु के मिलने से पूर्व कबीर की कविता कच्ची है, उसकी दश और दिशा अनिर्णीत है। बस यही चाह उमगती है कि प्रभु का साक्षात्कार हो और कबीर का जन्म लेन अकारथ न जाए। इस संदर्भ में कबीर कहते हैं-